

॥ श्री दुर्गाद्वात्रिंशन्नाम स्तोत्र ॥

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गाऽऽपद्विनिवारिणी ।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी ॥ १ ॥

दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा ।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला ॥ २ ॥

दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमाऽऽत्मस्वरूपिणी ।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता ॥ ३ ॥

दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी ।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी ॥ ४ ॥

दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी ।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी ॥ ५ ॥

दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी ।

फलश्रुति :

नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया सुधी मानवः ॥ ६ ॥
पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः ।
शत्रुभिः पीड्यमानो वा दुर्गबन्धगतोऽपि वा ।
द्वात्रिंशन्नामपाठेन मुच्यते नात्र संशयः ॥ ७ ॥

विशेष : भगवती दुर्गा की प्रसन्नता हेतु एवं विशेष कार्यसिद्धि हेतु इस स्तोत्र का प्रयोग कर सकते हैं ! ३० हजार पाठ इस स्तोत्र का पुरश्चरण है ! Swami Rupeshwaranand चैनल पर इस विषय में विस्तारपूर्वक समझाया गया है !

अधिक जानकारी के लिए +91- 7607233230 इस नंबर पर सन्देश (sms) भेजें अथवा <https://swamirupeshwaranand.in/>
यह वेबसाइट देखें !

नारायण !! – श्रद्धेय स्वामी रुपेश्वरानंद जी महाराज